

M. T. R. COLLEGE, SURAT

Manuscripts Library

No. ^{Ref.}
_{Sec.}

1550

Title: *Tiladhenu Dama*
Vidhi

1530

one complete

C

Tida dhenu dane vidhi

| | | |
|---------|---|---------------|
| : | : | : Title |
| : | : | : Author |
| : | : | : Editor |
| : | : | : Year, Vols. |
| SK | : | : Publisher |
| 1530 | : | : Remarks |
| 6/12/51 | | |

एम्पन्न॥ सदक्षिणमया नुस्यं दत्ते सुक्ता विमर्जयत्॥ दीयमानं प्रपश्यंति
 ये च सष्टष्टमानयाः॥ तेषु शेषा ह्यनिर्मुक्ताः प्रयाति परमा गति॥ ॥ प्रशान्त
 ये सुशीला यादव वृत्तधरा यच॥ धेनु तिलमयी दत्त्वा न शोचति कृता कृते॥
 त्रिरात्रं यः तिलाहारः तिलधेनु प्रदोत्तवेत्॥ एकाहमथ वा न द्या तद्वत्
 नोत्तरात्मना॥ दाना द्विष्टुष्टपापस्य तस्य पुण्यं कृतो नृपः॥ चांद्रायणा द
 प्यधिकं कथितं तिलजक्षणां॥ ॥ ७॥ ॥ इति श्री दानघण्डितिलधेनु दानम
 हिमासमाप्तः॥ ॥ संवत्त्राषाडादि ३३ वर्षे चैत्रवदि १० रात्रौ व्याघ्र
 गणेशसुतत्राशाधारण लिखितमिदं पुस्तकं यादृशं हस्तके दृष्टं ताड
 शीलचित्तमया॥ यदि शुद्धममुं च वा ममादायान दीयते॥ शुभं न वतु॥ श्री॥

तिल
 उदा
 विधि

३

मुक्ताफलान्विता॥ सितवस्त्रयुग छिन्नां कृत्वा शृङ्गासमन्वितः॥ कांस्योपदोहनी
 दत्त्वा केशवः प्रायतामिति॥ यालक्ष्मी सर्वदिवानाया वदेवैव स्थिता॥ धेनु
 रूपेण सा देवी मम पापं व्यपोह तु॥ देहस्था या च रुद्राणीशं करस्य सदा क्षिप्रमा
 ॥ धेनुरूपा सा देवी मम पापं व्यपोह तु॥ विष्णोर्वक्ष्ये सियालक्ष्मी स्वाहा या च
 विज्ञावसोः॥ चंद्राक्षरा क्र रा किर्या धेनुरूपास्तु सा श्राय॥ चतुर्मुखस्य या
 लक्ष्मीया लक्ष्मी धनदस्य च॥ यालक्ष्मीला कपालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे॥ स्व
 धा त्वं पित्रं मुख्यानां स्वाहा यज्ञं तु तया सर्वपापहरा धेनुरस्माच्छांतिप्रय
 क्षम॥ ब्रह्मपुराणे त्वयं मंत्रः॥ तिलाश्च पिष्टा दवश्च निर्मिता मे ह गोसवे॥ ब्रह्म
 एतन्मया धेनुर्दत्ता प्राणानु केशवमिति॥ ततः प्रदक्षिणां कृत्वा पूजयित्वा प्र

तिल
 धेनु
 दान
 विधि

२